Faridabad Plot Built Properties in all Sectors

SYNDICATE ESTATE AGENCY

Ind. Plot no. 11, Sector-15A, Faridabad.
Ph. : (o) 2284588
(R) : 2224288

Spl. In - Residential, Commercial & Industrial

मेहनतकशों का पैग़ाम

मेहनतकशों के नाम

Email :
mazdoormorcha@yahoo.co.in

मज़दूर मोर्चा

पाक्षिक

नेट पर उपलब्ध :
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06/R.N.I. No. 66400/97

ANCHOR ROADLINES

(Regd) SCO - 29, Shoping Centre, Sec. - 11D, FBD.
Daily Parcel Service
For : Noida, Surajpur, Kasna, Ghaziabad, Haridawar, Gurgaon, Manesar, Dharuhera, Bhiwadi, Vice Varsa

24, Hours Service

Phones : 2285044, 2291388

वर्ष 26 | अंक 4 | फरीदाबाद, मंगलवार, 1-15 जनवरी 2013 | फोन : - 9999595632 | सहयोग राशि 2 रुपया

एक वी आई पी सुरक्षा पर हज़ार पुलिसकर्मी और हज़ार जनता को लूटने पीटने को एक ही काफ़ी

बलात्कार के बहाने व्यवस्था पर उगला गुस्सा, नज़ला सारा पुलिस पर

नई दिल्ली (म.मो.) दिनांक 16 दिसम्बर, रविवार की शाम करीब साढे नौ बजे से सवा 11 बजे तक चलती बस में 23 वर्षीय पैरा मेडिकल छात्रा के साथ हुए सामूहिक बलात्कार ने न केवल दिल्ली की जनता को झकझोर कर खड़ा कर दिया बल्कि पूरे देश में मानों व्यवस्था के खिलाफ़ विद्रोह की सी स्थिति बन गयी। इसका सबसे उग्र रूप देश की सत्ता के मुख्य केन्द्र राष्ट्रपति भवन पर देखने को मिला जहां पुलिस के बैरीकेट्स तोड़ कर जनता राष्ट्रपति भवन के भीतर घुसने को उतारू हो गयी। इसे काबू करने के लिये पुलिस को आंसू गैस व लाठीचार्ज का सहारा लेना पड़ा।

इस मुहिम में जुटी असंगठित भीड़ को न तो कोई राजनीतिक दल बसों में ढो कर हलवा पूरी के लालच में लाया था और न ही ये लोग किसी के बहकावे में आ कर किसी निजी स्वार्थ के चलते जुटे थे। भीड़ में अधिकांश युवक युवतियां विभिन्न स्कूल कॉलेजों में पढ़ने वाले विद्यार्थी थे। इनका प्रदर्शन कई मायनों में एतिहासिक रहा है जिस राष्ट्रपति भवन के दरवाजे (विजय चौक) तक कभी कोई प्रदर्शनकारी नही पहुंच सके वहां तक ये लोग पहुंचे। पहुंचे जरूर लड़े भी अच्छे, सरकार के गुरूर को तोड़ कर घुटने भी टिकाये लेकिन रहे पूर्णतया दिशा विहीन ही। न्याय के नाम पर बलात्कारियों को सज़ा ए मौत मांग रहे थे। कुछ उन्हें पुलिस हिरासत से निकाल कर भीड़ के हवाले किये जाने की मांग कर रहे थे ताकि भीड़ उन्हें पीट-पीट कर सज़ा ए मौत दे सके। कुछ लोग पुलिस वालों पर कड़ी कार्यवाही करने की मांग कर रहे थे तो कुछ कानून एवं न्यायिक प्रक्रिया में बदलाव की मांग कर रहे थे। कुल मिलाकर भीड़ में आक्रोश तथा उफ़ान तो पूरा था परन्तु उद्देश्य एवं नेतृत्व से पूर्णतया वंचित थी। सरकार के लिये बड़ी समस्या यह थी कि वह किस से सौदेबाज़ी करे और किस की क्या बात माने?

लाठी से खदेड़ने का असफल प्रयास

शेष पेज 2 पर

आग बुझने के बाद भी जलाते हैं निगमकर्मी

फ़रीदाबाद (म.मो.) गतांक में नगर निगम के दमकल विभाग की हरामखोरी के बारे में पाठकों ने जो पढ़ा वह अधूरा सच था। उनकी असली दुकानदारी, लूट खसूट एवं पीड़ित को निचोड़ने का सिलसिला तो उस आग के बुझने के बाद शुरू होता है जिसके बुझाने में उनका रत्ती भर भी योगदान नहीं होता। आग जब सब कुछ जला कर राख कर चुकी होती है तो उस पर अपनी रोटियां सेकने पहुंचते हैं निगम के दमकल कर्मी।

गतांक में बताया गया था कि बल्लबगढ के सीकरी प्याला रोड पर पेप्सीको गोदाम में लगी आग को बुझाने के लिये दमकल गाड़ियां तब पहुंची थी जब सब कुछ जल चुका था। आग बुझाने में कोई योगदान था तो वह जे सी बी कम्पनी से निजीतौर पर भाईचारे में बुलाई गयी दमकल गाड़ी का था, जिसने कोई फ़ीस व खर्चा नहीं मांगा, जबकि निगम ने प्रत्येक लंगड़ी लूली गाड़ी को भेजने के नाम पर पहले घंटे का 500 रुपया तथा उसके बाद 200 रुपया प्रति घंटा के हिसाब से 34000 रुपया का बिल बना दिया। इसके अलावा 60 दमकलकर्मियों को भोजन कराने पर 6000 रुपया ढाबे वाले को जो देने पड़े वे अलग से, वे कर्मचारी मानो आग बुझाने की ड्यूटी पर न आ कर बरात में आयें हों।

> ■
> **एक रिपोर्ट पुलिस की ओर से उसके बाद दमकल विभाग की ओर से। इन दोनों रिपोर्टों के लिये रिश्वत देना अनिवार्य है। परन्तु इस मामले में सीकरी स्थित पुलिस चौकी वालों ने न केवल पूरा सहयोग किया बल्कि रिपोर्ट भी बिना रिश्वत के बना कर दे दी। दमकल की रिपोर्ट बीमा के क्लेम आदि के लिये अति आवश्यक होती है। इस लिये दमकल अधिकारी क्लेम की रकम का 5 से 10 प्रतिशत तक कुछ भी झटकना अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझते हैं।**

इतना ही नहीं निगम में बिल जमा करके रसीद ले पाना भी कोई आसान काम नहीं। इसके लिये निगम के अलग-अलग दफ़्तरों के चक्कर लगाने पड़ते हैं। जिस-जिस जोन की गाड़ी आई हो उस-उस जोन में जा कर बिल भरना पड़ता है। पलवल वाली गाड़ी का पलवल जा कर। सभी रसीदें लेकर एन आई टी स्थित मुख्यालय में बैठे बड़े अग्निशमन अधिकारी नंदा के दरबार में पेश होना पड़ता है। किसी दफ्तर में जाने की इतनी परेशानी नहीं जितनी इन कर्मियों के बर्ताव से होती है। कभी बाबू नहीं है, बाबू है तो रसीद बुक नहीं है, दोनों है तो अफ़सर नहीं है, कल आ जाना, परसो आ जाना आदि आदि । इस चक्कर में जब पीड़ित टूट लेता है तो वह इनकी 'सेवा पानी' करता है। इसके बाद बनती है फ़ाइनल रिपोर्ट। एक रिपोर्ट पुलिस की ओर से उसके बाद दमकल विभाग की ओर से। इन दोनों रिपोर्टों के लिये रिश्वत देना अनिवार्य है। परन्तु इस मामले में सीकरी स्थित पुलिस चौकी वालों ने न केवल पूरा सहयोग किया बल्कि रिपोर्ट भी बिना रिश्वत के बना कर दे दी। दमकल की रिपोर्ट बीमा के क्लेम आदि के लिये अति आवश्यक होती है। इस लिये दमकल अधिकारी क्लेम की रकम का 5 से 10 प्रतिशत तक कुछ भी झटकना अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझते हैं।

- शेष पेज 2 पर

इस एक गैंगरेप पर हंगामा क्यूं है बरपा...

मनोज कुमार झा

दिल्ली की हाड़ कंपा देने वाली ठंड में शोले भड़क रहे हैं। मानो आग लग गई है। न बुझने वाली आग। पूरा देश ही अचानक उबलने लगा है। लोग बौखला रहे हैं। क्या हुआ? बलात्कार। नृशंस बलात्कार। गैंगरेप। पर यह तो कोई नई बात नहीं। हमारी महान सभ्यता और संस्कृति का बलात्कार अभिन्न अंग है। हमारा पौराणिक साहित्य बलात्कार के प्रसंगों से भरा हुआ है। और आधुनिक साहित्य भी। हर दूसरी फ़िल्म में बलात्कार के सीन होते हैं। आधुनिकाओं के साथ बलात्कार, तो असूर्यम्पश्या नारियों के साथ भी। खेतों में, खलिहानों में, गांवों की गलियों में, चमारों की टोली में और जगमगाते महानगरों की झोपड़पट्टियों में, खोलियों में लगातार बलात्कार होते हैं। दूध पीती अबोध बच्चियों के साथ, स्कूल जाने वाली मासूम लड़कियों के साथ, युवतियों अधेड़ महिलाओं, यहां तक कि 70-75 साल की वृद्धाओं के साथ। किसी को नहीं छोड़ा। बाहर बलात्कार, घर में बलात्कार, सड़कों पर फर्राटा भरती कारों में बलात्कार, नेताओं की कोठियों में, ऑफिसों के चेंबरों में, नौकरशाहों के जंगलों में, थानों में, जेलों में, अनाथालयों में, स्पतालों में, महिला सुधार गृह में। हर जगह। बलात्कार। फ़िर यह हंगामा क्यों बड़पा है? ज्वालामुखी क्यों फट रहा है? क्या हमारा समाज अब बलात्कार को बर्दाश्त नहीं कर सकता? तो हुक्काम शायद ऐसे समाज को ही बर्दाश्त न करना चाहें।

शर्म उनको मगर आती नहीं

बलात्कार का विरोध करने वालों छात्रों-नवजवानों, अंग्रेजीदां अति-आधुनिक युवतियों पर पुलिस की लाठियां बरसीं। बलात्कार के विरोध में सत्ता के हृदयस्थल दिल्ली के विजय चौक पर उमड़ी हज़ारों की भीड़ को पुलिस ने दौड़ा-दौड़ा कर पीटा। 'लोकतंत्र' ने अपने चेहरे पर से नकाब नोच डाला। बयानबाज नेताओं ने बयान देना जरूरी नहीं समझा। बहुत देर से, आखिरकार गृहमंत्री शिंदे का बयान आया, कहा कि उनकी भी तीन लड़कियां हैं। तो क्या वे भी 'असुरक्षित' हैं। ऐसा कह कर शायद शिंदे ने बलात्कार पीड़िता और न जाने असंख्य पीड़िताओं का मजाक ही उड़ाया। ब्लैक कैट कमांडो के सुरक्षा घेरे में रहने वाले नेता यह न कहें कि उनके घरों में लड़कियां हैं और बलात्कार की घटनाएं उन्हें चिंतित करती हैं। जनता को ज्यादा बेवकुफ मत समझें। बहरहाल, जब हद ही हो गई तो धारा-144। रूस के राष्ट्रपति पुतिन की भ्रष्ट हुक्कामों से मुलाकात। वेन्यू बदला गया। पुतिन साहब यहां के नेताओं से भ्रष्टाचार के मामले में इक्कीस हैं। जितनी दौलत उनके पास है, उतनी दुनिया के कम ही नेताओं के पास होगी। और रूस की लड़कियां दिल्ली में ज़िस्म बेचती हैं। रूसी समाज में भी बलात्कार महामारी बनता जा रहा है।

शेष पेज 2 पर